रात्रि क्लास 18/7/68 : – सबसे नम्बरवन चित्र है गीता का भगवान कौन? जब गीता का भगवान सिद्ध हो जावेगा तो फिर सर्वव्यापी का ज्ञान उड़ जावेगा। है भारत की ही भूल जो सभी जगह फैल गई है। बाबा भी भारत में, कृष्ण भी भारत में ही है। सीढ़ी भी भारत की ही है। तो भारत की ही भूल बाहर चली गई है। गीता का भगवान सिद्ध करने से सर्वव्यापी का ज्ञान उड़ जावेगा। इसलिए बाबा का जोर है। यह भूल भी ड्रामा अनुसार है। फिर होगी। अगर ऐसा होता यह हम कह नहीं सकते हैं। समझाया जाता है भूल न होती, तो फिर चक्र भी नहीं फिरता। ड्रामा ही हार और जीत का बना हुआ है। इसलिए ऐसे भी नहीं कह सकते। समझाया जाता है भगवान गीता सुनाकर स्वर्ग की स्थापन करते हैं। मनुष्य गीता सुनाकर स्वर्ग को नर्क बना देते हैं। इन प्वाइंट पर जोर दिया जाता है; परन्तु कर ही क्या सकते हैं। आगे चल शायद केस आदि हो। कोशिश कर रहे हैं। तुम गवर्मेन्ट को सुधार रही हो। नशा होना चाहिए हम ब्राह्मण शुद्र गवर्मेन्ट को सुधार कर दैवी गवर्मेन्ट बना रहे हैं। आगे चल जब तुम्हारा झाड़ बढ़ता जावेगा पीछे महसूस करेंगे इन द्वारा मनुष्य स्वर्ग का मालिक बन सकता है। बच्चों को यह समझाया गया है 5000 वर्ष पहले भी तुम ही स्वर्ग के मालिक थे। तुम ही सभी होंगे। तुमको ही बाप का मुँह देखना है, परिचय लेना है जो सतयुग, त्रेता वासी है। ब्राह्मण कुल और सूर्यवंशी–चन्द्रवंशी।

अपन में एक ही आदत डालनी है अपन को आत्मा समझ और बाप को याद करना। अभी तुम बच्चे बने हो आस्तिक। आस्तिक उनको कहा जाता है जो बाप को और बाप के रचना के आदि, मध्य, अन्त ड्युरेशन को जानते हैं। तुमको निश्चय है हम यह जानते हैं। बाप से ही सीखे हो। बच्चे जानते भी हैं। शिव जयन्ती भारत में ही बनाई जाती है। शिव जयन्ती माना ही स्वर्ग की जयन्ती। स्वर्ग की जयन्ती माना ही राजयोग की जयन्ती। बाप राजाओं का राजा बनाते हैं ना। संशय तो नहीं है ना। कल्प2 हर 5000 वर्ष बाद देवी देवताओं की राजाई स्थापन होती है जरूर। अनेकानेक बार, अनगिनत बार पास्ट में स्थापन हुई है। होती रहेगी। ड्रामा तो फिरता ही रहेगा। कब पूरा होने का ही नहीं है। ड्रामा चलता ही रहता है। यह लड़ाई आदि भी उसमें हैं। फिर जयजयकार दैवी स्वर्ग की स्थापना होनी है। कलियुग के बाद है सतयुग। यह सतयुगी राज्य स्थापन करने का पुरुषोत्तम संगमयुग है। यह बातें बच्चों को कब भूलना नहीं चाहिए। सतयुग में देवताओं का राज्य। कलियुग में रामराज्य है नहीं। फिर होने का है। भगवान आते ही है संगम पर। इनका नाम है पुरुषोत्तम संगमयुग। अर्थात् उत्तम ते उत्तम पुरुष बनने का युग। वह तो यह ही है। यह खांसी है दादा का कर्मभोग। शिवबाबा को खांसी होती होगी? नहीं। अच्छा मीठे2 सिकीलधे बच्चों को रूहानी बापदादा का यादप्यार गुडनाइट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते। नमस्ते।